जादू का खेल

लीला मजुमदार

चित्रांकनः सुजाता खन्ना

Copyright © KATHA

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

Copyright © KATHA

जादू का खेल

लीला मजुमदार

चित्रांकन: सुजाता खन्ना

KATHA

Copyright © KATHA

मैं अगर कहूँ, कि एक जादूगर ने, केवल मेरे ही लिए जादू का खेल दिखाया, तो शायद तुम्हें विश्वास नहीं होगा!

Copyright © KATHA

उस दिन मैं बहुत उकताई हुई थी। अगर मेरी जगह होते तो तुम भी उकता गये होते।

ज़रा सोचो! स्कूल के मैदान में जादू का खेल हो और तुम केवल इसलिए नहीं जा सकते, क्योंकि तुम्हें बुख़ार है!

मैं घर में बिल्कुल अकेली थी, बहुत उदास। मैं टहलती हुई पिछवाड़े आँगन तक चली गई।

Copyright © KATHA

पता है मैने क्या देखा? उसे ! जादूगर को!

वह गौशाला के पास, छोटे टीले पर बैठा था।

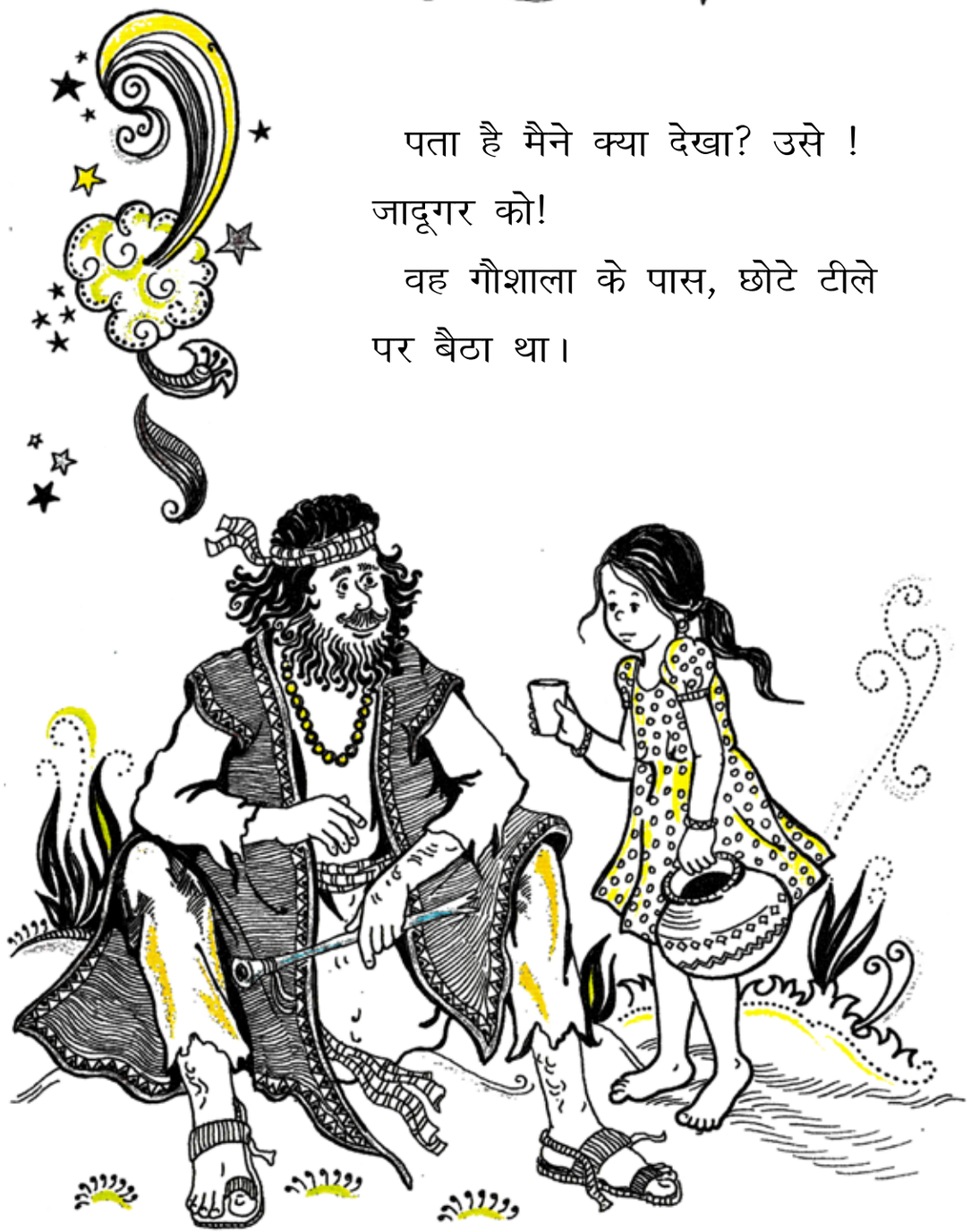

धूल में सना, उसके कपड़े क्या थे, बस चिथड़े ही थे, पैरों पर जगह-जगह खरोंच के निशान।

मुझे देखकर वह बहुत ही खुश हुआ। वह भूखा-प्यासा था। मैं उसके लिए पानी और थोड़ा दूध ले आई। वह सब कुछ ऐसे चट कर गया, मानो कई दिनों से कुछ खाया-पिया न हो।

फिर उसने मुझ से पूछा, 'तुम इतनी उदास क्यों हो?' और न जाने क्यों, मेरी आँखों में आँसू भर आए।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

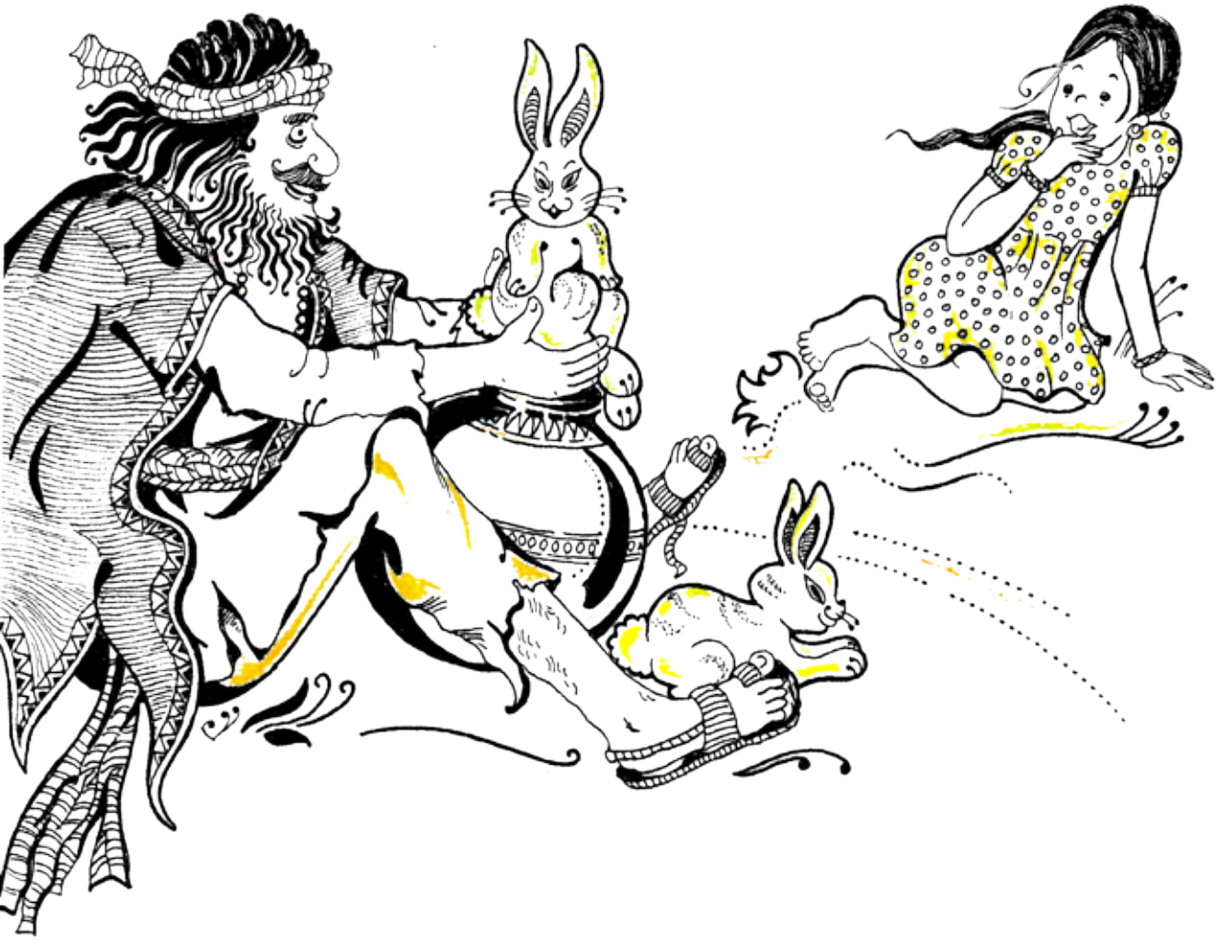

उसने जल्दी से अपना हाथ हवा में लहराया और जाने कहाँ से एक तलवार आ गई! उसने उसे पकड़ कर, अपने सिर के ऊपर घुमाया और फेंक दिया। मैं सच कह रही हूँ, तलवार गायब हो गई! उसी समय!

Copyright © KATHA

फिर उसने एक खाली बर्तन उठाया और उसमें से पकड़-पकड़ कर खरगोश निकालने लगा, हाँ, सचमुच! पता है! उसने पूरे पच्चीस खरगोश निकाले। रूई के गोले से फुदकते, वे अपनी रोयेंदार पूँछ हिलाते भाग गये।

मैं घास पर बैठ गई, हैरत में डूबी और उसका खेल चलता रहा।

Copyright © KATHA

उसने एक बाल्टी को कछुआ बना दिया और फिर दोबारा से बाल्टी।

उसने एक टूटा कंघा, अपने उलझे हुए भूरे बालों में फेरा, तो हज़ारों पीली-पीली तितलियाँ निकल कर उड़ चलीं, फिर उसने कँधे को झाड़ा, तो ढ़ेर सारे प्यारे-प्यारे सफ़ेद फूल चारों ओर बिखर गये।

और अन्त में उसने एक रूमाल निकाल कर, उसमें दो तीन जगह गाँठें बाँध दीं! अब रूमाल एक छोटे आदमी सा दिख रहा था।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

सब लोगों के घर लौटने का समय हो चला था। रूमाल के छोटे आदमी और जादूगर ने भी, मुझसे विदा ली और दोनों नाचते-गाते हुए चले गये।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

yhyk etsenkj एक पश्चिम बंगाल के प्रख्यात साहित्यिक परिवार से संबंधित हैं। वह बाल साहित्य के क्षेत्र में कई साहित्यकारों में श्रेष्ठ हैं। और उनके द्वारा लिखी हुई पहली कहानी सन् 1922 में *संदेश* में प्रकाशित हुई है। वह उपन्यास और जीवनी की उभरती हुई लेखिका हैं, जिन्हें भारत सरकार ने सन् 1963 में उनकी पुस्तक *उपेन्द्र किशोर रेचौधरी* के लिए सम्मानित किया था। उन्हें किशोर साहित्य में उत्कृष्टता के लिए रवींद्र स्मारक और विद्यासागर स्मारक के लिए पुरस्कार भी मिला है।

lqtkrk [kUuk, सन् 1992 से एक इलस्ट्रेटर और कार्टूनिस्ट के रूप में काम कर रहीं हैं। उन्होंने कथा की कई किताबें सचित्र की हैं और साथ ही इंडिया टुडे ग्रुप की *टारगेट मैगज़ीन, टाटा मैक्ग्रा हिल पब्लिशर्स, डाऊन टू अर्थ मैगज़ीन, निरंतर* और *औक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस* के लिए भी काम किया है। वह रचनात्मक रूचि के अनुसार कैनवस पेंट करती हैं और अपने ऑनलाइन ब्लॉग के लिए रेखाचित्र वाली कविताएँ भी लिखतीं हैं।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

यह कहानी बुख़ार से उकताई हुई एक लड़की की है। वह अपने स्कूल में आए जादूगर का खेल नहीं देख पाई। उसे अपने घर के पिछवाड़े वाले आँगन में कोई बैठा दिखा। अब वह जानना चाहती है कि क्या वह सचमुच का जादूगर है? पढ़िए और जानिए इस प्रश्न का उत्तर और बाकी अन्य राज़।

Copyright © KATHA